24 April

Date __ /__ /____

निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान की जाय जिससे उन्हें अपने आत्म सम्मान एवं स्वाभिमान को बरकरार रखते हुए जाति के समान सहभागियों के रूप में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी करने का अधिकार मिल जाय।]

PG Sem-II ① Stop

Date 14/03/17

2. संस्कृतिकरण (Sanskritization)

डॉ० श्री निवास ने अपनी पुस्तक आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन में संस्कृतिकरण की अवधारणा विकसित की है। इन्होंने संस्कृतिकरण को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

"संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निम्न जाति के हिन्दू अथवा जनजाति के रीति-रिवाज, धार्मिक कार्य, विचार अथवा जीवन पद्धति का उच्च और प्रायः द्विजीज जाति की दिशा में परिवर्तन होता है।"

डॉ० श्री निवास ने यह भी लिखा है कि संस्कृतिकरण का अर्थ केवल नवीन प्रथाओं तथा आदतों को ग्रहण करना ही नही बल्कि पवित्र तथा लौकिक जीवन से सम्बन्धित नये विचारों एवं मूल्यों को भी प्रकट करना है। कर्म, धर्म, पाप, माया, संसार, मोक्ष आदि संस्कृति के कुछ अन्य आध्यात्मिक विचार है और जब लोगों का संस्कृतिकरण हो जाता है तो वे अपनी बात-चीत में इन शब्दों का प्रयोग करने लगते है।

संस्कृति के कारण :-

आधुनिक समय में भारतीय समाज में कुछ ऐसी अवस्थाएं है जिसके कारण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की क्रियाशीलता सरल हो जाती है वे निम्नलिखित है :- 1. आधुनिक शिक्षा नगरों का विकास, धन का महत्व, यातायात तथा संचार के साधनों का विकास, राजनीतिक सत्ता, सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन आदि।

2. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया :- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत निम्न बाते ध्यान देने योग्य हैं:

1. संस्कृतिकरण के द्वारा एक जाति अथवा जनजाति समुदाय में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करने का प्रयत्न करना।

Page No. ____

Scanned with CamScanner

ii. जाति पद सोपान में निम्न स्तर पर स्थापित समूहों के बीच अपने धार्मिक कार्यों एवं विश्वासों को संस्कृतिकरण कर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को उच्चता प्रदान करने का भरसक प्रयत्न करता रहता है।

iii. संस्कृतिकरण में एक निम्न जाति उच्च जातियों की रीति-रिवाज एवं धार्मिक कार्यों को अपनाकर अपना व्यवहार तथा आचरण बदल लेती है।

iv. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में स्थानीय देवी-देवता, तालाब, कुआँ तथा धार्मिक तथा अन्य संस्कृतिक तथ्य स्थानीय महत्व के होते हैं। वह हिन्दुओं की पुस्तक में दिए गए गुणों से जुड़े होते हैं।

v. संस्कृतिकरण के द्वारा जिसमें निम्न जाति अथवा उच्च जातियों के धार्मिक कार्यों एवं रीति-रिवाजों को अपनाकर पालन करता है। उनके साथ निम्न जातियों का विश्वास होता है जिनके साथ भी द्विवीज के सम्मान व्यवहार किया जाएगा।

vi. संस्कृतिकरण में केवल ब्राह्मण ही अपनाये जाने वाले नहीं होते हैं बल्कि क्षत्रिय, वैश्य ही प्रतिमान के रूप में लिए जाते हैं लेकिन सभी स्थितियों में निम्न जाति अपने अलग उच्च जाति के रीति-रिवाज एवं धार्मिक कार्यों को अपनाकर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने की कोशिश करती है।

vii. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया न केवल जातियों में पाई जाती है बल्कि यह जनजातिय समुदाय में भी पायी जाती है।

viii. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में एक जाति विशेष को आदर्श मान लिया जाता है और जो निम्न जाति या जनजाति उसे आदर्श मानती है वह उसी आदर्श जाति के ही रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा, तथा जीवन पद्धति को

Date ___ /___ /______

अपनाने का प्रयत्न करती है। प्रायः वह आदर्श जाति द्विवीज जातियाँ ही होती है।

ix. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में ब्राह्मण आदर्श को प्रायः लोग सर्वश्रेष्ठ मानते है क्योंकि इनके साथ धार्मिक तथा शुद्धतावादी आदर्श की भावना जुड़ी हुई है।

x. श्री. श्री निवास ने यह भी बतलाया है कि संस्कृतिकरण के लिए किसी विशेष आर्थिक स्तर की आवश्यकता नहीं है बल्कि आर्थिक स्तर ऊँचा होने से संस्कृतिकरण में अवश्य आवश्य ही मिलती है।

xi. भारतीय ग्रामीण समुदायों में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में प्रभु जाति की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रभु जाति होने के लिए किसी जाति में निम्नलिखित तीन विशेषताएँ है :—

a. स्थानीय समुदाय में सबसे अधिक कृषि भूमि पर स्वामित्व स्वामित्व उस जाति की संख्या अधिक हो।

b. उस जाति की संख्या अधिक हो।

c. स्थानीय सोपान में ऊँचा स्थान

प्रभु जाति को पद सोपान में ऊँचा स्थान मिल जाता है इसीलिए इसके रीति-रिवाज एवं अन्य कार्यों में निम्न जाति के लोग ग्रहण करने लग जाते है।

श्री० निवास ने अपने तर्क को साबित करने के लिए जाति तथा जनजाति समूहों से निम्नलिखित उदाहरण लिया है:— जैसे:—

- मैसूर के लिंगायत ने आठवी सदी में अपने जीवन को संस्कृतिकृत किया था।
- हाल के दिनों में संस्कृतिकरण स्थानीय तथा संरचनात्मक दोनों तरह से फैला है।
- केरल के इलावन, दक्षिण भारत के लोहार, पंजाब के राम-रुरिया, उत्तर-प्रदेश का चमार, झारखण्ड के उरांव, राजस्थान

Date __/__/__

के भील, और मध्यप्रदेश के गोंड ।

• उपर्युक्त निम्न जातियों एवं जनजातियों ने अपने जीवन के तरीकों को संस्कृतिकृत करने की कोशिश की है।

• उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि आधुनिक भारत में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के द्वारा निम्नलिखित जातियों तथा जनजातियों तथा अन्य समूहों की सामाजिक स्थिति रीति-रिवाज, आदर्श, मूल्य, कर्मकाण्ड, विचार, आदि में उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहा है।

Date 16/03/19

संस्कृतीकरण किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण है यह निम्न बातों से स्पष्ट है :—

I. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से निजी जाति अपने से ऊँची जाति के रीति-रिवाज, धर्मकाण्ड, विचारधारा तथा मूल्यों को अपनाती है। इसके परिणाम स्वरूप उनके रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधाराओं में उल्लेखनीय परिवर्तन हो जाते है।

II. संस्कृतीकरण के द्वारा निम्न स्तर की जाति या जनजाति अपनी सामाजिक वर्तमान स्थिति से उच्च स्थिति को प्राप्त कर लेती है। अत: जातीय अथवा सामाजिक एवं संरचना में परिवर्तन आ जाता है।

III. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के कारण उच्च जाति की विशिष्टता और प्रभुत्व में धीरे-धीरे परिवर्तित हो जाता है। अत: हम कह सकते है कि संस्कृतीकरण जातीय आधारों में खुलापन लाता है तथा जातीय गतिशीलता को संभव बनाता है।

IV. संस्कृतीकरण केवल जातीय संरचना एवं स्तरीकरण में ही नहीं बल्कि सामाजिक संरचना एवं स्तरीकरण में भी उल्लेखनीय परिवर्तन लाता है।

V. स्तरीकरण में ऊँचे पद का दावा किया जाता है अत: निम्न जातीयों की नीचे से ऊपर की ओर गतिशीलता बढ़ जाती है। जिसके कारण सामाजिक परिवर्तन प्रभावित होता है। राजस्थानों में भीलों में, मध्य भारत में गोंड़ में और उरॉंव में, तथा हिमालय की पहाड़ी जातियों में संस्कृतीकरण की प्रक्रिया दिखलाई पड़ती है

Date ___/___/_____

संस्कृतीकरण के फलस्वरूप ही बहुत-सी जनजातियाँ अपने को हिन्दू होने का दावा करती हैं तथा उसी के अनुरूप अपने को ढालने का प्रयत्न करती है। इस प्रकार उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि संस्कृतीकरण सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है।

संस्कृतीकरण की अवधारणा की आलोचना

संस्कृतीकरण की अवधारणा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या की गई है। परन्तु इस अवधारणा की आलोचना खुद एम० एन० श्रीनिवास ने भी किया है। उनके शब्दों में: "संस्कृतीकरण निसंदेह एक 'चिलुका' शब्द है फिर भी कई कारणों से यह ब्राहमणीकरण से बेहतर पाया गया है।" इस संकल्पना की जटिलता तथा ढीलेपन के कारण ही भारतीय समाज के विश्लेषण में इसकी उपयोगिता बहुत ही सीमित है। इसी बात को मानते हुए डॉ श्रीनिवास ने लिखा है कि "संस्कृतीकरण एक अत्यंत जटिल तथा विषम संकल्पना है, वास्तव में इस एक अकेली संकल्पना को मानने की अपेक्षा अनेक संकल्पनाओं को मानना अधिक ढेर ही उपयोगी है यह एक विस्तृत सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रक्रिया के लिए केवल एक नाम मात्र है।"

संस्कृतीकरण के संदर्भ में उल्लेखनीय बात यह है कि यह अवधारणा इस सत्य को छिपा जाती है कि संस्कृतीकरण की एक विपरीत प्रक्रिया भी भारतीय समाज में क्रियाशील है डॉ० मजूमदार ने यह बताया कि "भारत में संस्कृतीकरण की प्रक्रिया ही अधिक क्रियाशील दिखाई पड़ती है जिसके अंतर्गत स्वयं ऊँची जातियाँ ही अपने विशिष्ट आचार-विचार, वेश-भूषा, रीति-रिवाज को आज त्याग रही है। आज कश्मीरी पण्डितों में बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने ने अपने परंपरागत रीति-रिवाजों को छोड़ दिया है। उसी तरह नीची जातियों के व्यवसाय को ऊँची जातियों द्वारा अपनाया जाता है।

Stop

Scanned with CamScanner